जैनकाव्य परंपरा और आनंदघन

डॉ. भारती रावत

© Dr. Bharati C. Ravat

पुस्तक के किसी भी भाग या समुचित पुस्तक का किसी अन्य स्वरूपमें इस्तेमाल करने या फोटो कॉपी करने से पहले लेखक की पूर्व सम्मति लेना आवश्यक है। वर्ना उसे कोपी राइट एक्ट का उल्लंघन माना जाएगा और ये कानूनी तौर पर अपराध है।

ISBN 978-93-86366-27-6

प्रकाशन वर्ष
जनवरी , २०१७

टाइप & सेटींग
भरत बी. पटेल
एक्सेलेंस कोम्पुटर सेन्टर , हिमतनगर

प्रिन्टिंग & बाइंडिंग
भगवती प्रिंटिंग प्रेस, हिमतनगर

प्रकाशक
ग्रीन फ्लेग फाउंडेशन
सोनासण, जिल्ला :साबरकांठा , गुजरात राज्य , पिन.३८३२१०

एक प्रत का मुल्य: 225/- रु.

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में साहित्यलेखन परंपरा १०५० से मानी गई है। इससे पूर्व भी प्राकृत, पाली अपभ्रंश भाषा में हिन्दु, बौद्ध व जैन परंपरा का धर्म प्रचार, उपदेशात्मक साहित्य कंठस्थ परंपरा में उपलब्ध होता है। बाद में हस्तलिपियों में रूपांतरित हुआ है।

भारत में जैन परंपरा का अपना श्रेष्ठ स्थान है। भारतीय धर्म साधना में चिर कालीन परंपरा का निर्वाह जैनाचार्यों द्वारा होता रहा है। भगवान महावीर स्वामी के पवित्र बहुजन हिताय के विचारों और सिद्धांतो का निर्वाह उनके बाद की पिढ़ियों ने किया है। बौद्ध व जैन परंपरा के आचार्यो व शिष्यों की परंपरा ही हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में भक्तिकाल के संत कवियों के रूप में जाने लगी है।

आनंदधनजी हिन्दी और गुजराती भाषा के ऐसे संतकवि है, जिनको एक परंपरा से बांधा नही जा सकता। आनंदधन मध्यकालीन संत परंपरा की उज्जवल कड़ी है। संत रामानंद द्वारा दक्षिण से जिस भक्ति साधना का दीप उत्तर भारत में उसकी ज्योतिपूंज समग्र भारत वर्ष में कबीर और अनेक महान संतो ने फैलाई। प्रस्तुत किताब में आनंदधनजी का जीवन, परंपरा, कृतित्व, प्रासंगिकता और अन्य संतो का प्रभाव जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों की समीक्षा की गई है।

अध्याय-1

आनंदघन का रचनात्मक वैशिष्ट्य 1-47

1.1 आनंदघन का जीवन चरित

1.2 आनंदघन का व्यक्तित्व

1.3 आनंदघन का कृतित्व

अध्याय-2

जैन काव्य परंपरा और आनन्दघन 48-135

प्रस्तावना

2.1 जैन धर्म की प्राचीन परम्परा

2.2 जैन धर्म दर्शन के प्रमुख सिद्धांत

2.3 त्रिरत्न

3.4 सम्प्रदाय

3.5 अपभ्रंश के जैन कवि

3.6 हिन्दी साहित्य में अपभ्रंश जैन परंपरा का महत्त्व

3.7 हिन्दी साहित्य में जैन भक्ति काव्य परम्परा और आनन्दघन

3.8 आनन्दघन का काव्य विद्वानों की दृष्टि में

3.9 मध्यकाल की पृष्ठभूमि

3.10 जैन कवियों की प्रवृत्तियाँ

संदर्भ ग्रंथ 136-143